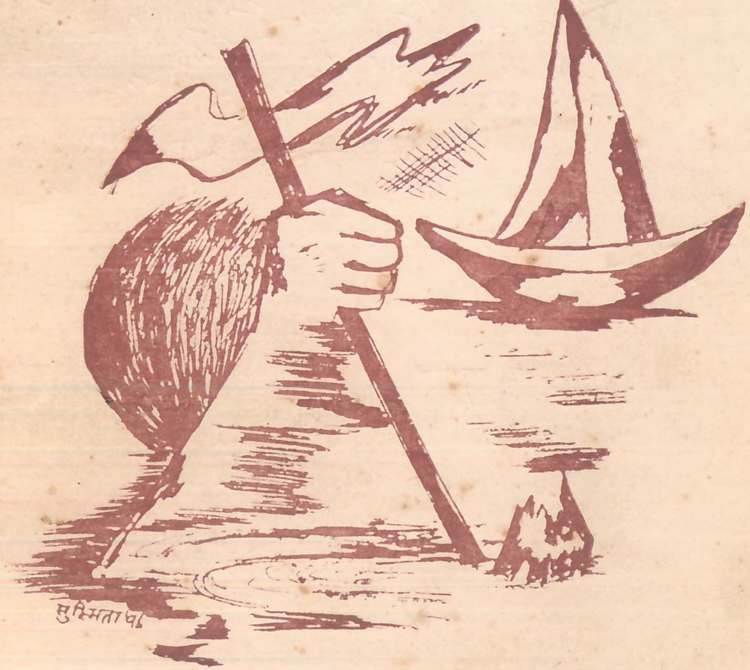
सुस्मिता पाठक



परिचिति

परिचिति

परिचिति

सुस्मिता पाठक

किसुन संकल्प लोक, सुपौल

प्रथम संस्करण : मार्च 1997
स्वत्वाधिकार : सुस्मिता पाठक
प्रकाशक : किसुन संकल्प लोक
किसुन कुटीर, सुपौल 852 131, बिहार
चित्रांकन : सुस्मिता पाठक
अक्षरांकन : डा॰ नवीन कुमार दास
मुद्रक : धीरेन्द्र कुमार गुप्ता, सौरभ प्रेस, सुपौल
मूल्य : बीस टाका मात्र

PARICHITI : A Collection of Maithili Poems
by SUSMITA PATHAK.

मूल्य-60 रु०

रचना क्रम

□

खंड : एक



ऐसा कोई ना मिलै
जासों रहिये लागि
सब जग जलताँ देखिया
अपनो अपनी आगि

— कबीर

प्रसवपीड़ा मे छटपटाइत आकाश

अहाँ के बूझल नहि अछि
जे कोना होइत अछि भोर
कोना सुखा जाइत अछि रातिक पसरल नोर
अहाँ के बूझल नहि अछि
प्रसवपीड़ा मे छटपटाइत
नील - आकाशक यंत्रणा
कोना फटैत अछि आकाश
आ जन्म लैत अछि नवल - सूर्य
अहाँ के बूझल नहि अछि।

अहाँ भोरका पहिल किरणक उपभोग आ
रस मे नहाइत प्राकृतिक - सुषमाक
रसास्वादन नहि क' सकै छी
नीक लगैछ अहाँ के अपन मरण।

अहाँ कोनो रेशमी कपड़ाक सीरक मे बन्न
अन्हार मे ओनाइत पाउज करैत
अपना पलंगक परिधि के
बुझैत छी सत्य
एकरे बुझैत छी विश्वद्वार
अहाँ स्वयं मे लिप्त छी असहाय - लाचार
अहाँ के बूझल नहि अछि।

जे सूर्य कोना विहुँसैत छैक
नेनुआगर बच्चा जकाँ
कोना आकाशमध्य हँसैत छैक
कोना भ' जाइत छैक लाजे मुँह लाल
अहाँ ओढ़ि के सीरक
दोसाला - शाल
अपन अन्हार कमरा मे बन्न
कनैत रहब हकन्न
अहाँ के बूझल नहि अछि
कोना होइत अछि भोर। ▢

केहन लागत

केहन लागत
जे बहुत सिनेह आ आस्था सँ
अहाँ कोनो प्रिय वस्तु केँ
रातिक एकान्त मे पढ़ैत होइ
आ तखने भुक द' बिजली गुम भ' जाइ

अहाँ लाख - लाख हथोरिया
सिरमा सँ ल' क'
कोठीक कान्ह धरि द' आबी
ने सलाइ भेटय
आ ने डिबिया
कहू तखन केहन लागत ?

अन्हरियाक प्रेत
अपन सहस्रो हाथ सँ
अहाँक आँखि पर आ मोन पर
मुक्का मारैत होइ
आ अहाँ थोड़बो इजोतक फाँक लेल
छटपटाइत रहि जाइ
आ नहि भेटय कोनो स्रोत अन्ततः
कहू तखन केहन लागत ?

अहाँ अन्हारक आतंक
आ आत्मीय वस्तुक प्रसंग
राति भरि सोचैत जागि जायब
ने तँ बिजली आओत
आ ने भेटत सलाइ वा डिबिया
कहू
सत्ते कहू, हमरा
तेहना मे अहाँ केँ केहन लागत ? ☐

अनिवार्य छैक उपक्रम

जंगल सँ निकलि
हम सब जंगल मे भटकैत रहैत छी अहर्निश
हमरा सब केँ नीक लगैत रहैत अछि
एकहि ठाम चकभाउर दैत
एकहि ठाम स्थिर रहब

हमर सभक गतिशीलता आ चेतना पर
जेना बर्फक एकटा पहाड़ औन्हल रहैत अछि
हम सब गलैत रहैत छी चुपचाप
स्वभावे बनि गेल अछि एहने
नीक लगैत रहैत अछि हमरा सब केँ
गतिहीनताक ई मुद्रा

मुदा आब तोड़हि पड़त एकरा
बर्फक पहाड़ केँ हटबय पड़त कपार पर सँ
नहि तँ आरो कहिया धरि
गलैत रहब सभ क्यो एहिना

नहि, नहि, ओना नहि चलत काज
फाड़ू एहि अन्धकार केँ
अथवा कंठ मे दियौक आंगुर
किछुओ आवाज तँ होयत
विरोधक कोनो आवाज

आवश्यक छैक
गतिहीनता केँ तोड़बाक लेल
चेतनाक नव - नव आयाम सँ जुड़बाक लेल
अनिवार्य छैक उपक्रम । ☐

राति आ दिन

एकटा सम्पूर्ण राति
हमरा आँखि मे उगल अछि
एहि रातिक सम्पूर्ण विस्मय - आतंक
हर्ष - विषाद, सुख - दुख
सब किछु जेना आँखिक कोर पर
राति भरि टहलैत रहल अछि
एहि टहलान मे राति भरि
हमरा भीतर रिक्तता छोड़ि किछु नहि रहल
एकटा अतृप्त आकांक्षा
मोन मे जागले रहल राति भरि

एकटा सम्पूर्ण दिन
हमरा आँखि मे उगल अछि
एहि दिनक सम्पूर्ण उल्लास - आकांक्षा
प्रकाशक स्वर्णाभ किरण - स्रोत
दिन भरि दैत रहल
रातिक लेल उलहन - उपराग

मोन मे विराग नहि, राग आनब
आब गायब मुक्ति - गीत
गूनब - बूनब मुक्तिक स्वप्नजाल
जन - जनक मुक्ति लेल
राग - ताल - लय मे प्रखर - मुखर गीत
यैह टा स्वाभाविक गति रहत हमर
रातिक सभटा अन्हार केँ
दिनक सूर्य हमर गीड़ि लेत
जन - जन मे आनत चेतना
यैह प्रकाशक अक्षय - स्रोत। □

ओकर दुनिया

भोर मे सुरूज जखन
अपन आँखि तकैत अछि
बहराइत अछि ओ ठेहिआयल डेग सँ
कान्ह पर रखने एकटा कोदारि
दर्जन भरि धीआपूता केँ फुसिअबैत
भरि पेट भोजनक आश्वासन पिअबैत

फेर शुरू होइत अछि
ओकर परिजनक एकटा बान्हल प्रतीक्षा —
साँझ कखन सुरूजक मुँह झँपतैक
बिनु तेलक जरतैक डिबिया
आ काँपि - काँपि मिझेतैक
कखन पसरत भरि घर काँच जारनिक धुआँ
कखन पाकत मड़ुआ रोटी
खायत फेकनी आ मुनियाँ

मुदा होइछ कतेक विपरीत
जखन ओ अबैत अछि
पसरैत छैक सौंसे घर
भभकैत दारूक दुर्गन्धक संग
अभावग्रस्त आत्माक कतेको कुशब्द
फेर तँ दारूक दुर्गन्धक प्रबल शक्ति सँ
हारि जाइत छैक
ओकर स्त्रीक देह सँ बहराइत
गोबरक दुर्गन्ध

कनिते - कनिते सूति रहैत छैक
फेकनी आ मुनियाँ
एहि सँ फराक
आओर नहि कतहु
ओकर दुनिया। □

किछु लोक

किछु लोक
खाली एक रस्ता भरि होइत छथि
अनुभव करैत टूटन
हजारक हजार
यात्रीक अबरजात सँ
रहरहाँ जनिका बाँहि मे
उगि अबैछ
झाड़ - झाँखुर आ काँट
आ पसरि जाइछ
सघन अन्धकार
जाहि मे थाकि - थाकि
होइछ खून - खूनामय
अनेक चिड़ै

ई रस्ता
मात्र आहत भेल
साँसक अनुभव करैछ
मलहम नहि क' पबैछ

किछु लोक
खाली
एक रस्ता भरि होइत छथि। □

अनुरोध

सब किछु भ' गेल अछि अशान्त
अपन परिवेश
अहाँ उगू आ क्षितिज धरि पसरि जाउ
अहाँ उगू आ जीवनक गीत बनि क' लहरि जाउ

विकृत क' रहल अछि
जे सम्पूर्ण अस्तित्व
आ हमर - अहाँक परिवेश केँ
नोचि - पटकि रहल अछि जे अपन देश केँ
अहाँ ओतय सूर्य बनि क' उगू
आ चारूकात
पसारि दियौक किरण - जाल

मुदा शताब्दी सँ याचक - मुद्रा मे ठाढ़
जन - जन केँ
ओकर प्रकाश घुरा दियौक
घुरा दियौक ओकर आकाश
आ ठाढ़ रहबाक धरती

अहाँ उगू आ
स्नेह बनि बरसि जाउ
अहाँ उगू आ
कर्त्तव्य - पथक काँटक वन केँ
साफ करबा मे लागल रहू
जागल रहू। □

भय

बारह बर्खक पुत्र
नहि भेटला पर
दस टा टाका
पहिने कानल
तमसा क' फोड़ि लेलक फुच्ची
क्रोधेँ तमतमायल
देखलक माय दिस

भरल मेला मे
खेलौना बला दुनलिया बन्नूक
पसिन्न भेलै ओकरा
प्रसन्नता सँ झूमैत
सभ सँ पहिने
नाटकीय मुद्रा मे
तनलक माय दिस

सर्द भ' गेलि ओकर माय
बारह बर्खक पुत्र
बाइस बर्खक भ' गेल हो जेना
ओकर अधवयसू आँखि मे
आ ओ बन्नूक
ठीके बुझयलै सचौंका

काल्हि अखबार मे पढ़ने छलि ओ
अपन पत्नीक संग मिलि क'
गहना - गुड़िया लेल
मारि देने रहैक एक टा बेटा
अपन माय केँ गोली। □

हथियार

किछु काल सोचि लैत छी
तँ कने हँसि लैत छी
कने लिखि लेलहुँ
तँ जीबि जाइत छी
चारि दिन आओरो

हँसबाक
आ जीबाक लेल
सोचब
आ
लिखब

बड्ड जरूरी अछि
अपन - अपन युद्धक लेल
अपन - अपन
हथियार। □

हमर कविता

रूसि कें
चलि गेल
जिद्दी नेना जकाँ
थूड़ि सबटा तार्किकता
बताह भेल
शब्दक ढेरी त'र
नुका गेल कविता

ओकरा चाही छल
अन्हारक विरुद्ध
एकटा छोट सन दीप
प्रत्येक मौसमक
ठीक - ठाक चेहरा
छल - छद्मक समीकरण सँ च्युत
मानवीयता

हम
एहि सभ उपकरण कें
ताकि रहल छी
जे पाँति - पाँति मे
आबि क'
फेर सँ बैसि सकय
हमर कविता। ❑

हमर निस्तब्धता कें थपकी दैत अछि चान

खोलि क' अपन खिड़की
हम प्रतिदिन
स्वागत करैत छी
भोरका ठरल हवाक
आँगन मे जमि जाइत अछि
रातिये भरि मे कजरी
ठहरल पानि पर डोलैत अछि शैवाल
कोनो एकान्त खधारि मे
ओकरा खोखरि कें
हम फेकि अबैत छी प्रतिदिन
आँगन सेहो उपकृत भ' उठैत होयत

हम गाछ केर पातक
सरसराहटिक ताल मे
रहैत छी दिन भरि गतिमान
ई चिन्ता हमरा लेल
नहि आयल अस्तित्व मे
जे ऊबि जाइत होयत माटि
हमर पदचाप सँ

प्रत्येक राति
हमर निस्तब्धता कें
थपकी द' जाइत अछि चान
तरेगन
हमरा पहुँच सँ बहुत दूर अछि
दिन चढ़िते
सूर्ज
हमर छाती मे होइत अछि। ❑

जानि नहि

आइ कालिह बेसीकाल
निन्न सँ जेना
शत्रुता भ' गेल अछि
राति - राति भरि करैत रहैत छी
निन्नक आवाहन

कथी लेल आओत निन्न
कथी लेल आओत चैन
ओहिना पड़ल रहैत छी
चुपचाप
बेचैन

जानि नहि
ई अन्हार
अन्हारक ई आतंक
कहिया समाप्त होयत
कहिया होयत भोर
पंजाब मे उठैत अछि बिरड़ो
मिथिला मे खसैत अछि नोर
जानि नहि
कहिया होयत भोर। □

कथा एकटा

हवा
साँय - साँय बहैत अछि
चेतनाक हवा

सबतरि
बहैत अछि
नवयुगक
कथा कहैत अछि
चेतनाक हवा

आगि
लहलह करैत अछि
क्रान्तिक आगि
नवयुगक
कथा कहैत अछि
क्रान्तिक आगि। □

ऋण अदायगी

ई बड़ु पैघ ऋण छल
हमरा ऊपर
व्याज - दर - व्याज बढ़ैत
हुनक शब्दक ऋण
हमरा घुरा देबाक चाही छल
बहुत पहिने

मुदा तखन
मौसम तीतल छल
भोर कुहेसाच्छन्न
आ रस्ता धुंध मे हेरायल

हमर अवचेतनक स्याही मे लपेटल
हुनक शब्द
बहुत रास हथियारक निर्माण
क' रहल छल ओहि समय

आब मौसम साफ भ' गेल अछि
आ रक्त - रंजित सूर्यक भरोस
माथ पर
हाथ फेरि रहल अछि

हम शब्दक हथियार सँ
लैस भ' क'
हुनक शब्द
व्याज समेत
घुराबय आयल छी। □

कखन होयत भोर

आइ कालिहक राति
बहुत नमहर होब' लागल अछि
दिनक अपन राति मे पूछैत अछि
परिचय

हवा आतंकित
अन्धकार स्तब्ध
चुप्पी केँ चीरैत
सर्द घाम सँ जागल चेहरा केँ
भिजा दैत अछि
हल्लुक सन आहटि
आ कोनो छोटो सन ठक - ठक
एक क्षणक मृत्युक अनुभव
आँचर मे साटि जाइत अछि

घड़ी भ' गेल अछि बन्न
अथवा ई राति बितबे नहि करत
नहि जानि कखन चिड़ै अनघोल करत
कखन बाजत घंटी
कखन पड़त अजान
भोर कखन होयत
कखन होयत भोर

जे कखन फूल फुलयबाक
बचा लेबाक लेल लहलहाइत फसिल
कखन, कोन राति क्यो गढ़त हथियार
सर्द चुप भेल मृत राति
आ सन्देहास्पद आहटि
ठक - ठक केर विरुद्ध
कि भोर कखन होयत
कखन होयत भोर। □

एहि नमहर यात्रा मे

समय केर बन्धन मे
बहुत संक्षिप्त
बीतैत अछि जीवन

पूसक रौद सन
धड़फड़ायल
थाकल आ निस्तेज
घीचैत वयसक चद्दरि
एहन घुसकुनियाँ
घुसकुनियेँ काटैत चलि जायब
नीक नहि लगैत अछि हमरा

सूखल देह
रेगिस्तानी मोनक बिम्ब केर
झलक सँ दूर
आरो दूर
हम चाहैत छी विस्तार
जेना अनन्त
खिलखिल करैत हरियरी
जेना अनन्त पदचाप
कोलाहलक विस्तार

कोनो संक्षिप्त प्रकरण
सम्बन्ध अथवा शब्द
हम चाहैत छी
सम्बन्धक विस्तार
एहि नमहर यात्रा मे। □

आगि

ओहि आगि केँ
मिझा देलक
अपजीव सब मिलि केँ
कोनो काल मे
सभ्यता - सलामती लेल
पाथरक रगड़ सँ
जे जनमल छल

ओ जाहि आगिक सृजन कयलनि
कूड़ाक ढेरी मे नहि लागि
निरन्तर फूँकैत जा रहल अछि
माल - जालक चरवोन्नी
घरक चार
आ नैतिक - सांस्कृतिक मूल्य

आब तँ एकबेर फेर सँ
ताकय पड़त एकटा जंगल
आदिपुरुषक रूप धारण क'
भटकि - भटकि
चुनय पड़त
दू टा पाथर
विपर्यित रक्त - परिशुद्धि लेल
जन्म देब' पड़त
आगि केँ। □

काल - चक्र

स्वतंत्रताक गीत
सदिखन गबै बला
हमर सभक सोनचिड़ै
कहिया ने उड़ि गेल

हमर सभक योजना
सरकारी फाइल पर
लिखल - पढ़ल टग हनैत
कहिया ने बूड़ि गेल

परतंत्रताक साँप
कपारे डँसैत अछि
सिंहासन पर बैसल
ओ देखि हँसैत अछि

हमर सबहक कालचक्र
अछि मुदा संगहि मे
डर छैक ओकरो जे
कपारे पर नचैत अछि

कहि नहि कहिया ई
मूड़ी - ए काटि देत
सबटा सिंहासन केँ
एकदिस सँ पाटि देत। □

खोज

ओ खोज
जे नेनपनक रस्ता सँ
शुरू भेल
पजेबा - माटि सँ सनल हाथ
आ बालुक टीला पर
पैर धसा क'
बनाओल गेल घरौंदाक
खालीपन मे जारी छल

आ फेर स्कूलक एकपेड़िया पर
किताबक आखर मे
अभावक मारि सँ
लजायल आँखि मे जारी छल

धीरे - धीरे पाछाँ छुटि गेल
पछिया मे सुखाइत गेल
मुदा ओ क्रम
खंडित नहि भेल आइधरि

दुर्बलक कंठ
आ नेनाक आवाज मे
वैह खोज
जारी अछि। □

तमाशा

तमाशा थिक
मजमा थिक
चद्दरि मे झाँपि अपन मुँह
पड़ल अछि जमूरा
चिचिआइत छटपटाइत अछि
औ ओस्ताद! खोलू हमर बन्हन

नहि जमूरा, पड़ल रह चुपचाप
बन्न कर आँखि
तोरा देखबाक थोड़बे छौ
तोरा तँ खाली तमाशा देखयबाक छौ

चिचिआइत अछि जमूरा
नहि ओस्ताद! ओम्हर देखियौ
नाँगड़ केँ पठाओल जा रहल अछि युद्ध लेल
बौना केँ सातम आसमान पर
बुद्धिमान - बलिष्ठ पठाओल गेलाह जंगल
ओ सब चरबैत छथि राति - दिन बकरी

चौंकैत अछि ओस्ताद
पुछैत अछि छूटिते के कयलक एना
जमूरा जल्दी कह

अहीं एना कयलहुँ ओस्ताद
ओस्तादे एना कयलक, ओस्ताद
जकरा हाथ मे एखन शासन केर डोरि

—तँ फेर उठ जमूरा
स्वयं देख आ मजमो केँ देखा
खूब चिचिया आ हल्ला मचा....। □

अस्तित्व

ओ झूठ कहैत अछि
जे ओ
ओ थिक स्वयं
ओ तँ क्यो आर थिक
ककरो प्रेरित
ओकर मनोरंजन आ
उपकरण
ई बात अलग थिक
जे अनुभूति ओकरे होइत छैक
सुख - दुख
मान - अपमान
गौरव - अहंकार आ
हीनताबोधक
वेदनाक आत्मीयता

मुदा
तथ्य ई थिक
जे ओ होइते कहाँ अछि
जँ ओकर अस्तित्व होइत
तँ ओ कनैत नहि
ने हँसैत
मात्र जीवन केँ
अपन खाँच मे
ढारि लैत
ब्रह्म भ' जाइत। □

एहि आगि सँ

गुलैंती सँ फोड़ि देलहुँ
टिटहीक दुनू आँखि
परती पड़ल माटिक संग
लागि - भिड़ि उगा लेलहुँ किछु फूल
छाउरक ढेरी सँ
जतन सँ चुनि लेलहुँ
किछु चिनगी
आ जरौलहुँ एकटा पलीता

अपन चोन्हरायल आँखि
आ निष्प्रभ आकृति लेने
देखिते रहि गेलहुँ अहाँ
हमरा दिस

उठा सकी तँ उठाउ
ई पलीता
आ जरा दिऔ
खून सँ रंगल
मुल्की रास कागत आ तकर पृष्ठ केँ
वा आतंकक महासमुद्र मे
पसरल अन्हार केँ जरा दिऔ
पलीताक एहि आगि सँ। □

संशयग्रस्त

ससरैत रहि गेल
छातीक भीतर
एकटा चित्कार
मृत्युक भेंट
बहुत ठरल आ निस्पन्द

देह
देह नहि रहि गेल
लोहा मे जमल रहि जाइत अछि जेना जंग
सोचबाक आ कहबाक की अछि
टूटि जा सकैत अछि जीवन - पतंग

कतहु अटकि जयबाक अछि
झाड़ - झँखाड़ मे फँसि घिसिऔट काटबाक अछि
पटरी पर खसि क' कटि जयबाक अछि

एहि सँ बचि गेलहुँ
तँ एक दिन कोनो हत्यारा वा
पेशेवरक खौफ केर
भ' जयबाक अछि शिकार
सौंसे जीवन जीबि
प्रकृत मृत्युक स्वप्न
आब नहि देखबाक अछि। □

घुरैत अछि सूर्ज

चिड़ै सब बना लेलक योजना
घूरि जयबाक
लोल मे दबा लेलक
किछु खढ़ - पात

ओ जे मृतप्राय छल
आन्हर आँखिये टोहैत
सुखायल जीह पर
रखबाक लेल किछु टुकड़ी
भरिसक आब धीरे - धीरे जीबि उठत
मुट्ठी मे भरि - भरि क' दाना
किछु मुस्की छिड़िअबैत
हुनका लेल भरिसक
फेर चिड़ै सब बदलि लेअय निर्णय
अथवा चलि गेलाक बादो
घूरि आबय

जेना प्रतिदिन भोर मे
राति भरिक यात्राक बाद
बिना शिकाइति
प्रस्फुटित घुरैत अछि सूर्ज
जेना अपन कर्त्तव्य - बोध सँ प्रेरित
प्रत्येक बर्ख
ठीक समय पर
घूरि अबैत अछि
मौसम आ ऋतु। □



सहि सकै कते
नर
दरद
तकर हम
माप
बनैत रहै छी

— कविचूड़ामणि मधुप



हम

हम
जहिया - जहिया
धारण कयलहुँ
देह
नामकरण भोगलक पुरुष
कम्पित भेल दसो दिशा
उगि गेल क्षुब्ध डाँरि
चुप भेल चेहरा सब पर....

मुदा
स्थिर रहल धरती
नहि भेल क्रोधित
दरारि नहि फटलैक
जाहि मे
चलि जइतहुँ हम
नहि क' सकलहुँ सार्थक
हम — सीता कें
एकटा शब्द
सीता कें। □

अग्निपिण्ड

ई तँ अहाँ
आइ देखलहुँ
तँ कहैत छी
जे ठुट्ठ भ' गेल अछि गाछ
आ सूखि गेल अछि
सबटा स्त्री

मुदा
बूझल नहि अछि
ई तँ होइते अछि ठुट्ठ
जन्महि सँ निष्प्राण

स्त्री केँ चीरि क'
बनैत अछि रोटी
सेकैत अछि पुरुष
अपन हाथ

कोनो दिन
एहि बीच सँ उड़ि क'
कोनो अग्निपिण्ड
जहिया खसत
ककरो देह पर
कतेक भयानक
कतेक मर्मान्तक
पीड़ा
आ फोंका भेटतैक ओतय। □

यातना

हमरा पाछाँ भागैत भीड़ केँ
बूझल नहि छैक जे
की लिखल अछि
हमरा पीठ पर

हमरा आगाँ
चलि आबि रहल भीड केँ
बूझल नहि छैक जे
हमरा छाती पर की गोदायल अछि

हम अपन एहि
लिखल आ गोदायल शब्द आ
आखर केर अर्थक बोझ सँ लदल
ठहरल छी बीच मे
ने तँ पीठ पाछाँ भागैत जुलूसक
द' पबैत छी संग
ने सोझाँ मे चलि अबैत भीड़ केँ
द' पबैत छी बाट

हमरा पीठ पर
लिखल अछि आजुक यातना
गोदायल अछि
हमरा छाती पर
काल्हुक प्रतीक्षा। □

भीत हिरणी

साओनक झुलुआ टूटैत छैक
माघक सिहकी बीतैत छैक
एहिना बीतैत छैक फागुनक मातल हवा
चैतक चैतावर
वैशाखक दुपहरिया
बरखक ई खंड - खंड एहिना घूमैत छैक

मुदा एहि सब सँ फराक
एकटा निसभेर अन्हरिया मे
जीबैत छैक ओ भीत हिरणी
काँट भरल बाड़ा मे मूड़ी नुकौने
कोखि सँ बहरायल छौना केँ पेट त'र दबौने

चारूकात पसरल इजोरिया होइ
आ कि कोनो पाबनि - तिहार
मुसकाइत होइ वसन्त
ओछायल हो सुखक तरंग—एहि सब सँ निर्लिप्त
उजरा झक्क नूआ देह मे लपेटने
आँचर त'र काँच दीप केँ जरौने
आँगनक तुलसीचौड़ा नीपैत
नोर खसबैत
उदासीक एकटा रंगहीन चित्र
देखबा मे लगैत छैक केहन विचित्र

कतहु होइत अछि कोनो जग - जाजन
कन्यादान वा दुरागमन
सब बाट बन्न, कतय हो आगमन
सब ठाम भेटैत छैक ओकरा
अगबे साँपे - साँप
विधिक विडम्बना देखि ओ जाइत अछि काँपि
गाम - घर - राह - बाट देखि सब हँसैत अछि
देहयष्टि देखि ललचैत अछि
एहि सब सँ बचबाक प्रयासो मे घेराइत छैक ओ
ई आर क्यो नहि मिथिलाक विधवा थिक। □

पहिचान

बटोही
रूकू
हमर बेटीक घर दिस
कोन रस्ता जाइत अछि
कहू हमरा

जतय धरि जनैत छी हम
जे एकटा रस्ता
पूब दिस अछि
जतय ओकर नैहरि छैक
एकटा रस्ता पच्छिम दिस
जतय ओकर सासुर छैक
एकटा रस्ता
जाइत अछि
अस्पताल दिस
एकटा रस्ता मे पड़ैत छैक
श्मशान

अहीं कहू
बटोही
ओकर घरक
कोन थिक पहिचान। □

भोरक खोज मे

निन्नक बेसोह यात्रा केर सहचर स्वप्न
खुरदुरायल हाथ सँ खिचैत
उपर - नीचा पथरायल बाट पर
बालुक गर्त्त मे धँसबैत
निच्छोह हाँकैत अछि हमरा

बदहवास भेल देखैत रहि जाइत छी हम
अन्हार मे
अन्हारक देबाल मे सहमल
भगजोगनीक पिपनी केर झपकी मे पंक्तिबद्ध आतंक
अपाहिजक अनन्त पक्ति
दुर्गन्ध आ गिजगिजाहटि
घृणा आ आवेग सँ संचालित होइत हम
बदलि जाइत छी अकस्मात
एकटा चित्कार, एकटा धड़कन, एकटा निस्तेज मुरूत मे

क्यो खीचैत अछि हमर हाथ
दोहाइ दैत अछि गलि गेल हाथ केर
क्यो हमर आँखि फोड़ि देब' चाहैत अछि
जे हुनक अधःपतन केँ नहि देखि सकी हम
क्यो हमर जीह काटि लेब' चाहैत अछि
जे हुनक पाप रहि जाय अर्चचित

हम चाहब
जे क' लेअय हमर इन्द्रिय केर अपहरण
ओ अपाहिज
हाथ - पैर - आँखि - जीह अवश्ये काटि लेअय
एकटा सम्पूर्ण काया क' तँ लेअय प्राप्त
ओ अपाहिज

हमर फड़फड़ाइत साँस
कायम रहत
स्वप्नक धृष्टता केँ बेधैत
स्वस्थ - सृजनोन्मुख भोरक खोज मे। ☐

खिड़की खोलि दियौ

उठू आ खिड़की खोलि दियौ
संभव हो तँ दरबज्जो खोलि दियौ
स्वजन सब
स्नेहक अजीब मूल्यांकन कयलनि
सबटा दरबज्जा स्वयं बन्न क' लेलनि

हमरा लग आब किछुओ बचल नहि अछि
जे चोर ल' जायत उठा क'
वा लुटि ल' जायत कोनो लुटेरा
अन्हारे बैसल अछि पहरा पर
आब कथीक ड'र

खिड़की सँ बाहर बहुतरास शीतल हवा
ताक - झाँक करैत अछि
खिड़की खोलि दियौ मीत
हम ओकरा अपन फेफड़ा मे
क' लेब एकाकार

पराजयक पीड़ा सँ आत्मसंघर्षरत
ने तँ एतेक निर्बल छी
जे बिगड़ि जायत मानसिक संतुलन
ने एतेक हिम्मति
जे आत्मघात क' ली
एहि दुनूक बीचक परिस्थिति सँ
उबरबाक लेल
जरूरी थिक खिड़कीक खुलब
उठू आ खिड़की खोलि दियौ। ☐

हमरा खिड़की मे कियैक नहि हुलकैत अछि

ओहि समय जखन हम नेना रही
आ खाली तोतराइत रही
हमरा घरक छहरदेबालीक ओहि पार सँ
सिसकीक स्वर आतंकित करैत छल
ओहि हो - हल्लाक सूची मे
टाँकल छलि एकटा स्त्री
पिरामिड मे बन्न ममी जकाँ
नहि जानि के चोरा क'
ओकरा मे थोड़ेक जीवन द' देने छलैक
कतहु सँ जबरदस्ती पकड़ि क' आनल गेल छलि ओ
पहिचानक लेल ओकरा लाल रंग सँ
चिन्हित क' देल गेल छलैक
हमर तोतराइत बुद्धि केँ बस यैह टा ज्ञात छल

आब जखन कि हम
काटि चुकल छी वयसक आधा गोरह
ओ स्वर आ हो - हल्ला अपन विविध रूप मे
हमरा घरक खिड़की सँ होइत
निरन्तर टकराइत अछि देबाल सँ

साँझ केँ बड़दक गरदनिक घंटी सुनाइ दैत अछि
ओकर सानी - कुट्टी लेल
गतिशील हाथक चूड़ीक खनक सुनाइ दैत अछि
केश खैंचि पछुआर मे पटकि देबाक
आ रोटी छीनि क' थारी फेकवाक
भूख आ रोटीक बेचैनी

विचलित होइत रहल छी दशक - दशक सँ
हमरा खिड़की मे कियैक नहि हुलकैत अछि ओ स्त्री
एकबेर तड़पि क'
फानि क' छहरदेबाली
ओकरा हमरा घ'र मे निश्चिते
निश्चिते आबि जयबाक चाही। □

एम० ए० क डिग्री

मौसमक बदलैत तेवर सँ अपरिचित
अलग - थलग
एक - एक पात खसबैत धरती पर
कोनो ठूठ सन ओ भीड़ मे सब सँ फराक
कारी भेल आँखि
आगाँ निकलल दाँत

सौन्दर्य नष्ट भ' गेल छलै
मुदा पहिने नहि छलि एहन
गदरायल डारि छलि ओ
कोंपल - सन कोमल मुस्कान
पढ़ैत छलि जखन कॉलेज मे
आँखि मे डूबैत - उतराइत छल भविष्यक
कोनो उदात्त सपना
कदाचारक युगहु मे राति - राति भरि जागलि
खूब पढ़ि पास कयलक एम॰ ए॰

बिआह भेलै एम॰ ए॰ पास सँ
एम॰ ए॰ क चकचोन्ही मे
घर - वर नहि देखलनि पिता
माथ पर देखलनि – एम॰ ए॰ क डिग्री
आँखि मे चमकलनि – एम॰ ए॰ क डिग्री
सुख केर कल्पना मे तहिआयल – एम॰ ए॰ क डिग्री
सपना मे ऐश्वर्य तकैत रहलि – एम॰ ए॰ क डिग्री

ओहि दिन ओकर हाल जनितो हम
पुछि देल निर्लज्ज जकाँ
की क' रहल छी दुनू बेकति आइ-कालिह
हँसैत बाजलि—
चाटि रहल छी हम सब एम॰ ए॰ क डिग्री। □

दाबी

शब्द मे रूपान्तरित भ'
हम पहुँचैत रहब तखन धरि अहाँ लग
जखन धरि इजोत आ अन्हार पर
हमर दाबी रहत
जखन धरि रौद अपन ताप सँ
हमर भीजल चेहरा केँ पोछैत रहत
हवा अपन ठरल स्पर्श हमरा साँस मे
उतारैत रहत निरन्तर
हम शब्द बनि
अहाँ धरि पहुँचैत रहब

मुदा तखन निराश नहि होयब अहाँ
जखन हमर शब्द - बाट पर उगि आबय दूभि
शब्दक चौबगली उगि आबय अनेक झाड़ - झँखाड़
तखन अहाँ स्वयं केँ आश्वस्ति दैत रहब
जे इजोत, अन्हार, रौद आ हवा
छीनि लेने अछि हमर दाबी
आ पकड़ा देलक अछि कोनो अज्ञात उद्देश्यक बाट
जेम्हर चलि देला पर
टूटि जाइछ स्वप्न सबटा
मृत भ' जाइत अछि सबटा चेतना

मुदा हम जाइत - जाइत सौंपि जायब
अहाँ केँ थोड़ेक वर्ण - समूह
अपना शब्द मे हमरा रूपान्तरित क' अहाँ
दाबी क' सकब शाश्वत सत्य पर

ई विश्वास करी हम ? □

चंपा

अहाँ सब मौसम मे
तर कोना रहैत छी
चंपा
जखन कि अहाँक मालिक
माछी जकाँ
भिनभिनबैत अछि
दारूक बोतल पर
आ सूँघैत अछि अहाँ केँ
एकटा आन्हर
भमरा जकाँ

अहाँ मुसकाइत छी
प्रत्येक साँझ
हिलैत छी
मालिकक अगवानी मे
आरो उज्जर भ' जाइत अछि
अहाँक चेहरा

मुस्की फेकि क'
कखनो
कनियों टा
उदासो रहल करू
चंपा । □

गंगा - जमुना

अहाँ निराश नहि होउ
जुनि धुन् कपार
आब नहि चलय दियौ
अनाचारक ई व्यापार
सृष्टिक सब रचना मे
कतेको परिवर्त्तन भेल
मुदा अहाँक पैर एखनो टूटले अछि
दुनू हाथ पाछाँ दिस
खुट्टा मे बान्हले अछि

एँहि सबहक के दोषी
मात्र अहाँक करुणा
आँखिक परिधि मे
बान्हल गंगा - जमुना

कने दृढ़ बनू
करू शक्तिक सृजन
अहीं तँ दुर्गा छी अहीं लक्ष्मी
अहीं चण्डी अहीं भवानी
तखन नहि शोभा दैत अछि
जीवनक प्रति ई बैमानी

मोनक तरलता
आब अहाँ त्यागू
पेटारी मे बन्न
आब अहाँ बहराउ। □

शेष अछि प्राण - रस

बन्न कोठली मे
आदमी निर्विघ्न सूतैत अछि
बन्न कोठली साक्षी अछि
जे बच्चा रहि - रहि कनैत अछि

बन्न कोठली मे
रहरहाँ बजैत अछि चूड़ी
बन्न कोठली नपैत अछि
प्रतिदिन अनेक मीलक दूरी

बन्न कोठलीक
सपना थिक खुशबू
आ ताहि पर
हावी अछि दारू

बन्न कोठली
राति भरि कनैत अछि
बन्न कोठली मे फड़फड़ाइत अछि हजारो पृष्ठ
गढ़ैत अछि प्रतिदिन
एकटा नव इतिहास

बन्न कोठली मे घुटन अछि
चित्कार अछि
उत्तेजना अछि
मुदा अखनो बचल थोड़ेक आस अछि
आ बन्न कोठली मे
अखनो शेष अछि प्राण - रस
शेष अछि
खिड़की खोलि लेबाक
विश्वास। □

मुक्ति - गीत

हम
बहि रहल चंचल हवा सँ पुछलहुँ
अहाँ हमरा संग रहू
हवा हँसि पड़ल आ बहि गेल
ओकर निश्छल मुस्कान केँ हम समेटि लेलहुँ

नदीक उन्मत्त लहरि केँ रोकि पुछलहुँ
रूकू, बहैत लहरि रूकू अहाँ
लहरि रूकि गेल हमर अनुरोध पर आ फेर
निरुत्तर नदी मे प्रवाहित भ' गेल

हम सोचि रहल छी तखने सँ
ई नदी
ई लहरि
ई हवा
ई पानि आ
ई मौसम
हमरे टा नहि
सबहक थिक
सबहक कल्याण निहित छैक एहि मे

आने लोक जकाँ
हमरो ई बेर - बेर
बंधन मे लैत अछि आ
मुक्त करैत अछि। ☐

प्रतीक्षा

एकटा मौसमक प्रतीक्षा
एखनो अछि
एकटा मेघौन दिनक प्रतीक्षा
एखनो अछि
हमरा सभक जीवन मे
अनेक - अनेक प्रतीक्षा बाँकी अछि

लोक जहिया जागत
जीवन सँ अन्हार भागत
चतुर्दिक पसरत आलोक
हमरा ओही दिनक प्रतीक्षा अछि

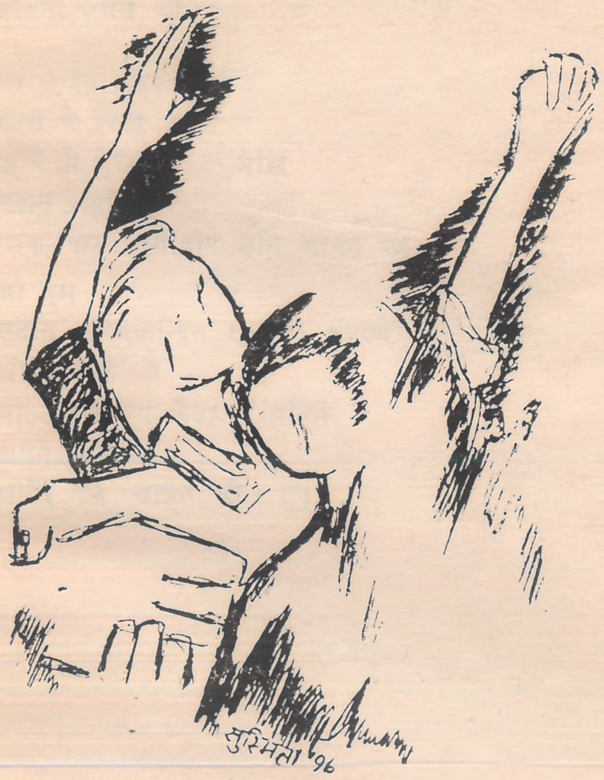
जहिया चिड़ै बन्धन - मुक्त होयत
जहिया ओ
स्वतंत्रताक गीत गाओत
जहिया मौसम आ नदी
जहिया जीवनक किरणमाला
अपन गीत पसारत
आ शब्द थिरकत
हमरा ओही दिनक प्रतीक्षा अछि

एखन बहुत - बहुत प्रतीक्षा
जीवनक कतोक इच्छा बाँकी अछि
हमसब ओही दिनक बाट
जोहि रहल छी। ☐

दर्जा

उम्मेदक यात्राक आरम्भे मे
ओ लेखक
लिखि देलक — अंतिम पड़ाव केर कथा
जेना अटूट हिम्मतिक सूची कें
चाटि जाय देबार
श्रम - संचित हरियरी कें
कोनो भुक्खर बड़द
चरैत चलि जाय
अपनैतीक स्वांग रचयबला
भ' जाय अपरिचित

एहि क्षति कें बूझि नहि सकल ओ
आ एहि सूत्र कें
मानबाक लेल क' देलक बाध्य
जे जखन भाव
अभावक रूप पबैत अछि
तँ मनुक्ख
ओहि करिखा पोतल
कपड़ाक दर्जा पबैत अछि
जे मात्र चूल्हि पर चढ़ल
बासन पकड़बाक आ
उतारबाक काज अबैत अछि। □



खुसरो दरिया प्रेम का उलटी वाकी धार।
जो उबरा सो डूब गया जो डूबा सो पार।।

— खुसरो

कल्पना

जखन कखनो अहाँक गप
उन्मुक्त हास - परिहास
आ इतिहासल सन्दर्भ
हमरा विचारक चारूकात घूमैत अछि
तखन हम अपना केँ
बंदिनी बुझैत छी

आ जखन अहाँक दृष्टि
शून्य मे किछु हेरैत
शून्ये मे हेरा जाइत अछि
तखन अहाँ
'शक' केर भागीदार बनि जाइत छी

आ हम
सदति आत्मकेन्द्रित रहलाक कारणेँ
ओहि 'शक' केँ
वास्तविक रूप लेबा सँ पहिने
अपने दिस
घीचि लेब' चाहैत छी। □

दीक्षा

आइ कालिहक एहि मौसम मे
जखन शरीर सँ फूटैत अछि गंध
निर्बन्ध
हम अहाँ केँ जानि नहि बेर - बेर
कियैक करैत छी स्मरण

भोर होइते
जेना बाल - रवि केँ देखबाक इच्छा
मोन मे अनेरे जागि जाइत अछि
तहिना हम कतोक बेर
कोनो समय मे अहाँ केँ
देखय चाहैत छी

हमर ई इच्छा आ हमर ई कामना
बेर - बेर कविता मे
जीवन मे
अपन स्वभाव आ व्यवहार मे
उतरि अबैत अछि

हम कातिकक उदास दुपहरिया मे
सेहो एहि त्वराक संग
करैत रहैत छी अहाँक प्रतीक्षा
जेना पृथ्वीक सभटा मौसम
दैत हो हमरा सदिखन यैह दीक्षा । □

सहयात्री

अहाँ केँ हम अतीतक कोनो शेष चिह्न
कोनो पाछाँ छूटि गेल सन्दर्भ - गीत
अथवा कोनो बीति गेल स्वर - ध्वनि
नहि बनय देब' चाहैत रही
ने इतिहासक कोनो आलेख
आ ने ऐतिहासिक स्मृति मात्र

हम तँ अहाँ केँ युग - युग सँ संचित
सत्यक रूप मे
जन्म - जन्मान्तरक लेल
आबद्ध क' लेब' चाहैत रही अपना मे
अपने भीतरक कोनो यात्रा मे
सहयात्री जकाँ

जतय यात्रा शुरू भेलाक बाद
फेर चुप भ' जयबाक छल दुनिया केँ
मुदा एना नहि भ' सकल
आइयो ओतबे दुर्गम आ दुरूह
बनल अछि हमर यात्रा
आइयो यंत्रणा आ त्रास सँ
भरल अछि हमर यात्रा
आइयो हमर प्रतीक्षारत आँखि
ताकि रहल अछि अपन सहयात्री केँ
जे फेर सँ आरम्भ क' सकी
अपन सबटा यात्रा । □

ओ की थिक

सुख आ दुख सँ अलग
जीवनक ओ कोन गीत थिक
जकरा
गबैत रहैत अछि आत्मा

उदासी आ उल्लास सँ अलग
जीवनक ओ कोन क्षण थिक
जखन आत्मा मे बजैत रहैत अछि -
एकटा मोहक संगीत

हर्ष आ विषाद सँ अलग
ओ कोन प्रेम थिक
जे अन्तस्तल धरि बहैत
रहैत अछि अहर्निश

प्रसन्नता आ पीड़ा सँ अलग
ओ कोन जीवन - राग थिक
जे गबैत रहैत अछि
मोन निरन्तर। □

समय - सन्दर्भ

आब एहिना होइत अछि
बेसी काल हमरा संग
एकटा सघन अन्हार
हमरा चारूकात पसरल रहैत अछि

उतरैत अछि हमर दिन
चुप भेल
पसरैत अछि हमर राति
चुप भेल
आ हमर आँखिक कोर
निरन्तर भीजल रहैत अछि
एकटा नदीक प्रवाह जकाँ
आँखि सँ बहैत रहैत अछि नोर

अपन तरहथ पर पसरल
हमर समय - सन्दर्भ
आ राग - विराग
एक्के सुर एक्के लय मे
गबैत रहैत अछि
कोनो करुण गीतक पाँती
मुद एहि सबहक अछैतो
अपन देह - मोन पर
बन्हने रहैत छी
सुख - उल्लासक गाँती। □

मौसम

हम मौसम पर
कविता लिखय चाहैत छी
मुदा अपन निम्न केर यात्रा मे
एखन धरि नहि बूझि सकलहुँ
जे कहिया वसन्त आयल
आ कहिया वसन्त बीति गेल

मुदा दोसरे क्षण हमरा लागल
जे मौसम पर लिखबाक लेल
वसन्त कखनो आवश्यक नहि छैक
मौसम पर लिखबाक लेल
सर्वप्रथम अपने मौसम केँ
हेरबाक चाही

तेँ हम किछु लिखबा सँ पूर्व
आब पहिने मौसम केँ
ताकि लेब' चाहैत छी
परिवेशक अन्तर मे
प्रकाशक डेग उसाहैत छी। □

समय एकटा पहाड़

समयक पहाड़ केँ उघब
बड्ड मोसकिल होइत छैक मीत !
बीति जाइत छैक वयस
आ लोक तकैत रहि जाइत अछि
शून्य आकाश दिस
अन्हारक कोनो परिभाषा नहि होइत छैक मान्य

समयक नदी मे अन्हार आ प्रकाशक रेखा सब
भासैत चलि जाइत छैक
लोक रोकि नहि पबैछ कोनो रेखा केँ
कोनो किरण केँ
लोक तकैत रहि जाइत अछि
शून्य आ सपाट चेहरा दिस

बदलि जाइत छैक लोक
चेहरा आ ओकर मान्यता
बदलि जाइत छैक स्नेह, ममता आ प्रेम
बदलि जाइत छैक वातावरण
आ समग्र परिवेश
सब किछु बदलि जाइत छैक
आ बहि जाइत छैक समयक धार मे
सब किछु भ' जाइत छैक तिरोहित
समयक पहाड़ केँ उघब
सत्ते, बड्ड मोसकिल होइत छैक मीत ! □

इन्द्रधनुषी मोह

अहाँक सामीप्यक
इन्द्रधनुषी मोह
आ अपन बताहि भेल इच्छाक
बन्धन मे भोगैत रहलहुँ
आइ धरि दर्द केँ चुपचाप
हम एकसर

अहाँक मिलनक
ऐच्छिक यंत्रणा मे स्थिर रहलहुँ
एकान्त मे निःशब्द
बड़ी - बड़ी कालि धरि
बहुत - बहुत दिन
आ हमर समग्र सुखद अनुभूति केँ
अपन आँखिक ओछाओन सँ
तटस्थ सोचैत अहाँ
तैयो कोनो आन सन्दर्भ मे डूबल रहलहुँ एकसर
हमरा सँ फराक अपन यात्राक
पुनरावृत्ति धरि

प्रायः अहाँ केँ नहि बूझल होयत
जे अपन खंडित अनुभूतिक
प्रसार केँ
समटैत टा रहि गेलहुँ
एम्हर हम। □

अनुत्तरित प्रश्न

नदी सँ
हम माँगने रही
अपन पिआसल कंठ लेल
एक चुरूक जल
नहि भेटल....

हवा सँ
माँगने रही हम
साँस लेबा लेल
थोड़ेक हवा
नहि भेटल ..

मौसम सँ
माँगने रही हम
ओकर रुप - रंग - गीत - गंध - स्वर
नहि भेटल ...

एहिना प्रिय
अहाँ सँ अपन समस्त गलतीक लेल
माँगने रही क्षमादान

आइ धरि
अनुत्तरित रहल
हमर प्रश्न - प्रश्न हमर। □

नदी

जंगलक बीच होइत
बहैत अछि निःशब्द
कखनो - कखनो खौलैत
कछेर पर माथ पटकैत
फेन - फेनामय होइत नदी

लहरि पर गूँथैत अछि
अखण्ड निजत्वक
अनगिनत शब्द
धीरे - धीरे पोछि जकरा
गरजैत अछि जंगल

आ नदी जरि उठैत अछि
भाप बनि - बनि
नहि जानि कोन - कोन आँखि धरि
पहुँचैत
बुन्न - बुन्न खसैत अछि नदी
फेर सघन आँच बनि
धीरे - धीरे
ठाढ़ि धरि लपकैत अछि
तड़पैत नदी । □

भोग

सपनाक की
ओकरा तँ आँखि मे
उतरबाक छैक
भोगबाक अछि हमरा
दृष्टिक विभीषिका
करौट फेरैत
टूटैत - बिखरैत
आ फेर जुड़ैत सपना

कतेक - कतेक उथल - पुथल
कतेक - कतेक पिआस
आगत - विगत केर
कतेक संत्रास
भोगैत वर्त्तमानक अनगिनत भार
कतेक - कतेक बिम्ब मे सौंपि
हँसैत अछि
आ टूटैत अछि सपना

सपनाक की
ओकरा तँ आँखि मे
उतरबाक छैक
भोगबाक अछि हमरा
दृष्टिक विभीषिका । □

के थिक ओ

के थिक ओ
चेतनाक पालकी पर
जे हमरा ल' उड़त
यंत्रणाक दाह कें
जे शीत प्रेषित क' सकत

हम विकल छी
हम विवश
हम अकिंचन छी परवश
एहि गजब केर कालिमा मे
हेरा गेल एहि आत्मा मे
भोतिआयल अछि
सृष्टिक सब सौन्दर्य

के थिक ओ
ओहि अनन्त नीलाभ पट पर
एकटा अर्जित विनयशीलताक
दीप ल' क'
आबि रहल अछि। □

स्मृतिक दंश

दू डेग चलल छलहुँ
आ कि बिजली गुम भ' गेल
निर्दय बिहाड़ि जड़ि सँ उपारि देलक
एकटा झमटगर गाछ कें
बियावान एहि बोन कें कोना पार करबै
अन्हरियाक एहि प्रेत स कोना कें उबरबै

एकटा सपने थिक आब
नदीक कछेर पर
लागल कोनो नाह
आ ओकर छाती चीरैत ओहि पार पहुँचि जायब हम

हमर मोनक पेटी मे बन्न अछि
कतोक रास स्मृतिक दंश
नारिकेरक फुनगी पर टाँगल
चिचोहियाक एकटा खोता
जकर देबाल पर सटल अनगिनत भगजोगनी
पातक सरसराहटिक मधुर संगीत
जीवन - कथाक एकटा इन्द्रधनुषी अंश

साँझ जखन गहराइत छैक
चान जखन बहराइत छैक
हमरा ई सब
मोन पड़ैत अछि। □

प्रेत

होयबाक छल
किछु आओर
मुदा आओर की ?

भरि मुट्ठी भूख
आ चुरूक भरि पिआसक
अतिरिक्त
आओर किछु नहि
एहि आँखि मे

एहि आँखि मे
सपनाक
खण्डहर
खण्डहर पर
डोलैत
साँसक प्रेत । □

यात्रा - चक्र

काल आ मौसमक
बदलैत यात्रा - चक्र मे
हम रहलहुँ
सदैव
अस्पष्ट आ मूक

आइयो टंगल अछि
दृष्टिक सोझा - सोझी
अनेक शक
यंत्रणा आ
अपरिचयक
फाटल कथरी

मुदा एना नहि अछि
जे मरि गेल अछि
उछलि - उछलि कें
कुतरबाक असफल प्रयास मे
आशा
स्नेह आ
चेतनाक
एकटा दुर्बल मूस । □

हम अहाँक दुख कें
चीन्हि पबैत छी
भरिसक एहि लेल अपनो दुख कें
समय हमरा की देलक
आ अहाँ कें ?

तय नहि क' पबैत छी
जे समयक संग चलनिहार
एक्के पथक यात्री कें
कोन - कोन तरहें क' देल जाइत छैक
हताश - अपस्याँत
पता नहि ई कोन विपरीत चक्र थिक
जे हमरा चारूकात वैह पुरान लाचारी
आ मजबूरी सबहक महाजाल लगातार
पसरैत चलि जा रहल अछि
अहाँ कहि सकी तँ कहू जे
ई हमर कोन स्थिति थिक
कि एहि सब जाल कें हम कोनो तेज धार सँ
काटि देब' चाहैत छी
आ जाल ओतबे तेजी सँ पसरैत
चलि जाइत अछि

हमरा अपन कसाव मे बन्हने अछि ओ
हम मुक्तिक गीत गबैत छी
मुदा मुक्त नहि भ' पबैत छी
एहि जाल - जंजाल सँ हम। ❑

सुस्मिता पाठक

जन्म तिथि : 25 जनवरी 1962

जन्म स्थान : सुपौल

लेखनारम्भ : 1979

शिक्षा : एम. ए. (राजनीति शास्त्र)

प्रकाशन : मैथिलीक पत्र - पत्रिका मे साठि - सत्तर रचना (कविता आ कथा) प्रकाशित

पन्द्रह - बीस रचना हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला आ पंजाबी मे अनूदित आ प्रकाशित

रुचि : संगीत आ पेंटिग

सम्पर्क : किसुन कुटीर
सुपौल - 852 131
बिहार

□ □